सुविचार

दूसरों के किस्सों को चटखारे लेकर सुनने या सुनाने वाले यह न भूलें कि हर हरकत पर ऊपरवाला नज़र रखता है। कहीं ऐसा न हो कि कल उन्हें मुँह छुपाने के लिए भी जगह नसीब न हो।

सुभाष चंद्र लखेड़ा, सान होजे, कैलिफोर्निया

कहानी

गुनहगार कौन

कमरे में प्रवेश करते ही अमिता ने देखा कि,माधुरी की बहू दबंग आवाज में परिवार जनों से बहस कर रही थी, अमिता कुछ समझ न सकी कि, मामला क्या है? उसने मुस्कुराते हुए चाय की फरमाइश कर माहौल को थोड़ा हल्का बनाया और माधुरी से पूछा कि,- 'हुआ क्या है,आज बहू रानी जरा तैश में नजर आ रही हैं ' माधुरी ने कहा,-- अमिता भाभी हमारे बेटे विकास और बहू के मित्रों की संख्या और मेल मिलाप का दायरा बहुत बड़ा है। इसी वजह से बाहर का खाना और अल्कोहल का सेवन कुछ ज्यादा ही हो रहा है।हम उन दोनों को यही समझा रहे थे कि, इतनी पार्टियां और बाहर का खाना पीना ये सब घर के आर्थिक बजट और तुम्हारी सेहत के लिए ठीक नहीं है तो बहू को ये बात रास नहीं आई।वो उल्टा हमें ही समझा रही थी, गुस्सा हो रही थी कह रही थी कि,हम लोग आधुनिक सोच विचारधारा की युवा पीढ़ी हैं , आजकल यही सामान्य है और हमें यही लाइफ स्टाइल पसंद है।आप लोग अपनी पुरानी पसंद नापसंद हम पर मत थोपिए। तब तक चाय नाश्ता आ गया, और बातचीत के विषय बदल गए ?। इस घटना को बमुश्किल चार महीने ही हुए कि, माधुरी ने घबराते हुए अमिता को फोन पर बताया कि, विकास अस्पताल में भर्ती है उसे पीलिया हुआ है। अमिता दोपहर में जब अस्पताल पहुंची तो विकास को देख कर स्तब्ध रह गई , अल्कोहल की वजह से उसके लिवर में सूजन आ गई थी और उसे कम से कम एक साल तक परहेजी भोजन , अनुशासित दिनचर्या और शराब से पूरी तरह दूर रहने की हिदायत दी गई है।यह सब बताते हुए माधुरी की आधुनिक बहू अपनी सास की ओर मुखातिब होकर कहने लगी, 'आंटी देखिए ना मम्मी और पापा के लाड़ प्यार ने विकास को बहुत जिद्दी बना दिया है ।हर बात में अपनी मनमानी करता है,रोज पार्टी और बाहर खाने पीने पर पापा मम्मी ने कभी रोक-टोक नहीं लगाई और अब परिणाम मुझे भुगतना पड़ रहा है। ' बेचारी सास गुनहगार की भांति सिर झुकाए चुपचाप आधुनिक बहू की बातें सुन रही थी और सोच रही थी कि,असली गुनहगार कौन है?

निकिता जैन

मोबाइल नंबर --9881586606

रिश्तों का नेटवर्क

सुधाकर अरसे बाद अपने मित्र पुष्पेंद्र के घर पहुँचे। बैठक सलीके से सजी थी। सोफे के सामने शोकेस पीली रोशनी में दमक रहा था, लेकिन जहाँ टीवी होना चाहिए था, वहाँ लिखा था 'बैठक में मोबाइल वर्जित है। ' सुधाकर ने आश्चर्य से पुष्पेंद्र की ओर देखा। पुष्पेंद्र केवल मुस्कुरा दिए। फिर बातों का सिलसिला शुरू हुआ। बचपन की शरारतें, कॉलेज के किस्से,

परिवार की बातें, सुख-दुख... कब दो घंटे बीत गए, दोनों को पता ही नहीं चला। बीच-बीच में गूँजते ठहाके जैसे घर की दीवारों में फिर से जीवन भर रहे थे। विदा लेते समय सुधाकर की नज़र फिर उन शब्दों पर पड़ी । मुस्कुराते हुए बोले, 'अब समझा, तुम्हारे घर में मोबाइल क्यों वर्जित है। ' पुष्पेंद्र ने सहज स्वर में उत्तर दिया, 'ताकि रिश्तों का नेटवर्क हमेशा बना रहे। '

विजय सिंह चौहान

आज़ादी

देश 15 अगस्त 26 को अपना 80वां स्वतंत्रता दिवस मना रहा है।जगह-जगह तिरंगे फहराए जायेंगे,समारोह होंगे और भाषण-अभिभाषण होंगे।देश प्रगति के पथ पर अग्रसर हो,मेलजोल और भाईचारे की भावनाएं संपुष्ट हों,गरीबी का उन्मूलन हो तथा वर्गहीन समाज की परिकल्पना साकार हो,यही कामना है।सभी मित्रों को इस शुभ-दिन की बधाई। यहाँ पर आज़ादी से जुडा एक छोटा-मोटा और हल्का-फुल्का संस्मरण याद आ रहा है। बात श्रीनगर/कश्मीर की है और लगभग पचास साल पुरानी है। द्वारिकानाथ नाम के एक सज्जन बदामीबाग स्थित सेना के कार्यालय में लिपिक के पद पर कार्य करते थे। सीधे-सादे व्यक्ति थे। समय पर ऑफिस जाना और समय पर घर लौटना। उस दिन पंद्रह अगस्त का दिन था। देश की आज़ादी का दिन ! द्वारिकानाथ को घर लौटने में काफी देर हो गयी। मां-बाप चिंतित और परेशान।---रात के बारह भी बज गए मगर द्वारिकानाथ का कोई अतापता नहीं। माँ दरवाज़े पर बैठकर बेटे का बेचैनी से इंतज़ार करने लगी। तभी द्वारिकानाथ ने घर में प्रवेश किया। उसके पैर डगमगा रहे थे और चाल भी कुछ बहकी-बहकी-सी थी।माँ बेटे की यह हालत देखकर घबरा गयी और उसने पति को आवाज़ दी:' देखना जी, यह द्वारिका को क्या हो गया है? पिता ने बेटे को देखा। सचमुच, द्वारिका के पैर डगमगा रहे थे और बहकी-बहकी बातें कर रहा था।मुंह से कुछ गंध भी आ रही थी।तभी पिता ने टोका : (दारे!यि क्योह?) 'द्वारके ! यह क्या ? ' 'ह-ह आज़ादी, आज़ादी!!' द्वारिकानाथ के मुंह से सहसा निकल पड़ा। माँ-बाप एक दूसरे का मुंह ताकने लगे।

डॉ शिबन कृष्ण रैणा

बंधवा मजदूर

रास्ते में मुझे कमलदास मिल गए एकदम गुस्से में थे, बोले -

आप सुबह-सुबह सरकार के विरुद्ध पोस्ट क्यों लिख देते हैं ? मैं - ताकि बंधवा मजदूर काम पर लग जाएं ! कमलदास - आएं !!

राजशेखर चौबे

बंटू भैया की संस्कारी छाती और जेन-जी का भाषाई बम

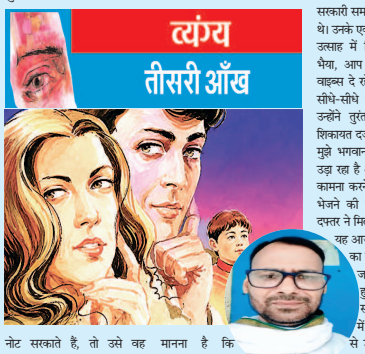

मोहल्ले के चौराहे पर आजकल बंटू भैया एक अदृश्य सांस्कृतिक सेना के सेनापति बने बैठे हैं। उनके चेहरे पर छाई चिंता की लकीरें इतनी गहरी हैं कि उन्हें देखकर लगता है जैसे देश की जीडीपी गिरने की पूरी जिम्मेदारी इन्हीं के कंधों पर है। लेकिन बंटू भैया की चिंता का कारण न तो देश की अर्थव्यवस्था है और न ही बढ़ती महंगाई। उनका इकलौता और सबसे भयानक संकट है इस देश के युवाओं, यानी जेन-जी की भाषा और संस्कारों का पूर्ण पतन। बंटू भैया को दृढ़ विश्वास है कि यह पीढ़ी कलयुग के उस आखिरी चरण में पहुंच चुकी है, जहां से वापसी का कोई रास्ता नहीं है। बंटू भैया उस कालखंड के बचे-खुचे अवशेष हैं, जहां किसी को गधा कहना भी एक बहुत बड़ा सामाजिक अपराध माना जाता था। वह आज भी बातचीत में साष्टांग दंडवत और महोदय जैसे शब्दों का बोझ ढोने के आदी हैं। ऐसे में जब वह अपने घर की बालकनी से नीचे झांकते हैं और उन्हें आधुनिक वेशभूषा में लिपटे नवयुवक अजीबोगरीब भाषा बोलते सुनाई देते हैं, तो उनका संस्कारी कलेजा कांप उठता है। कल ही उन्होंने पड़ोस के रिंकू को फोन पर अपने दोस्त से कहते सुना कि भाई, कल की पार्टी एकदम डैड थी, पर वहां जो खाना मिला वह एकदम फायर था। बंटू भैया ने आव देखा न ताव, तुरंत रिंकू की माताजी को सचेत किया कि आपका लड़का किसी संदेहास्पद आगजनी और मौत की साजिश में शामिल है। बाद में जब उन्हें पता चला कि डैड का मतलब उबाऊ और फायर का मतलब बहुत बढ़िया होता है, तो उन्होंने गुस्से में दो दिन चाय नहीं पी। दरअसल, बंटू भैया की समस्या यह नहीं है कि युवा गलत भाषा बोल रहे हैं। उनकी असली समस्या यह है कि युवा ऐसी भाषा बोल रहे हैं जिसे डिकोड करने के लिए किसी नासा के वैज्ञानिक की जरूरत पड़ जाए। उनके लिए रिज, स्लेय, नो कैप, और गोस्टिंग जैसे शब्द किसी विदेशी जासूसी कोड जैसे हैं। जब मोहल्ले की कोई लड़की अपनी सहेली से कहती है कि उसने उस लड़के को गोस्ट कर दिया, तो बंटू भैया तुरंत अपने कमरे में जाकर हनुमान चालीसा ढूंढने लगते हैं। उन्हें लगता है कि नई पीढ़ी ने अब सीधे आत्माओं और प्रेतों से संपर्क साधना शुरू कर दिया है। जब उन्हें समझाया जाता है कि इसका मतलब सिर्फ बात करना बंद कर देना है, तो वह झल्लाकर कहते हैं कि सीधे-सीधे कट्टी बोलना क्या इस पीढ़ी की शान के खिलाफ है? बंटू भैया के इस संस्कारी पाखंड की परतें तब खुलती हैं, जब वह खुद अपने जीवन में व्यवहार कुशलता का परिचय देते हैं। वह सुबह उठकर व्हाट्सएप पर गीता के श्लोक और मर्यादा के संदेश पूरे ब्रह्मांड को फॉरवर्ड करते हैं। लेकिन दोपहर होते ही जब वह अपनी गाड़ी का चालान कटने से बचाने के लिए ट्रैफिक पुलिसकर्मी की जेब में चुपके से गांधी जी की तस्वीर वाला नोट सरकाते हैं, तो उसे वह भ्रष्टाचार नहीं बल्कि लेन-देन की मर्यादा और व्यावहारिक संस्कार कहते हैं। उनके नियम बड़े स्पष्ट हैं कि बड़ों को रिश्वत देना एक शिष्टाचार है, लेकिन छोटों का आपस में ब्रो या डूड कहना सीधे-सीधे पाश्चात्य संस्कृति का हमला है। जेन-जी की इस तथाकथित गालिबाज़ी ने बंटू भैया के भीतर के स्वघोषित सेंसर बोर्ड को चौबीस घंटे चालू रहने पर मजबूर कर दिया है। वह हर शाम चबूतरे पर बैठकर ज्ञान की ऐसी गंगा बहाते हैं जिसमें केवल अतीत का गौरव और वर्तमान का विलाप होता है। उनका मानना है कि हमारी भाषा से तमीज और तहजीब गायब हो चुकी है। अब बंटू भैया को कौन समझाए कि जिस तहजीब को वह याद कर रहे हैं, वह भी अपने दौर में पुरानी पीढ़ी के लिए एक सिरदर्द ही रही होगी। इतिहास गवाह है कि हर बूढ़ी होती पीढ़ी को अपनी अगली पीढ़ी हमेशा बदतमीज और संस्कारी तौर-तरीकों से पैदल ही दिखाई देती है। मजेदार पहलू तब सामने आता है जब तकनीक बंटू भैया को अपने जाल में फंसाती है। पिछले दिनों उन्होंने दफ्तर के ग्रुप में अपनी एक पुरानी तस्वीर डाली, जिसमें वह किसी सरकारी समारोह में माला पहने खड़े थे। उनके एक नए जूनियर ने अति-उत्साह में टिप्पणी लिख दी कि भैया, आप तो सीधे गॉड लेवल वाइब्स दे रहे हो। बंटू भैया ने इसे सीधे-सीधे ईश-निंदा मान लिया। उन्होंने तुरंत अपने सीनियर को शिकायत दर्ज कराई कि यह लड़का मुझे भगवान बताकर मेरा उपहास उड़ा रहा है और मेरी लंबी उम्र की कामना करने के बजाय मुझे ऊपर भेजने की बातें कर रहा है। पूरे दफ्तर ने मिलकर उन्हें समझाया कि यह आज के जमाने की तारीफ का सर्वोच्च शिखर है, तब जाकर उनका गुस्सा शांत हुआ। बंटू भैया जैसे संस्कारी पहरेदार असल में समय की तेज रफ्तार से डर गए हैं। भाषा कोई लोहे की जंजीर नहीं है जिसे एक जगह बांधकर रखा जा सके, वह तो एक बहती हुई नदी है। नदी जब आगे बढ़ती है, तो अपने साथ नए कंकड़-पत्थर और नई मिट्टी लेकर आती है। आज के युवाओं की भाषा में अगर अंग्रेजी के शब्दों का तड़का है या कुछ अजीब से शॉर्टकट हैं, तो इसका मतलब यह कतई नहीं है कि उनके भीतर मानवीय संवेदनाएं खत्म हो गई हैं। बंटू भैया को अब यह कड़वा सच स्वीकार कर लेना चाहिए कि संस्कार किसी खास डिक्शनरी के शब्दों के मोहताज नहीं होते। जो लड़का दिन भर रील्स देखकर नो कैप चिल्लाता है, वही जरूरत पड़ने पर किसी बुजुर्ग को रास्ता पार कराने के लिए सबसे पहले आगे आता है। और जो लोग शुद्ध, क्लिष्ट और संस्कारी भाषा का चोला ओढ़कर घूमते हैं, कई बार उनकी नीयत में सबसे ज्यादा खोट होता है। यह जेन-जी उन्हें कब आउटडेटेड घोषित कर देगी, उन्हें पता भी नहीं चलेगा। अंततः, बंटू भैया की यह संस्कारी चिंता कुछ और नहीं बल्कि बदलते समय के साथ कदम न मिला पाने का एक फ्रस्ट्रेशन है। भाषा बहता हुआ पानी है, जो हर पीढ़ी के साथ अपना रास्ता और अपनी शब्दावली बदल लेती है। बंटू भैया को अब यह समझ लेना चाहिए कि संस्कार किसी भाषा के शब्दों में नहीं, बल्कि इंसान की नीयत में होते हैं। अगर नीयत साफ है, तो सिचुएशनशिप भी संस्कारी हो सकती है, और अगर नीयत में खोट है, तो चरण स्पर्श भी एक ढोंग से बढ़कर कुछ नहीं है।

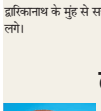

– सूर्यदीप कुशवाहा
वाराणसी उत्तर प्रदेश

बरगद की छाँव

गाँव का नाम था सूरजपुरा। छोटा-सा गाँव, जहाँ शाम होते ही मंदिर की घंटियाँ, बैलों की घंटियों से मिलकर ऐसा संगीत रचती थीं कि लगता था मानो समय भी कुछ देर के लिए ठहर गया हो। गाँव के बीचोंबीच एक विशाल बरगद का पेड़ था। लोग कहते थे कि उसने तीन पीढ़ियाँ देखी हैं। उसी बरगद की छाँव में बैठकर अस्सी वर्ष के रामस्वरूप बाबा बच्चों को कहानियाँ सुनाया करते थे।

बाबा के पास धन नहीं था, पर अनुभवों का ऐसा खजाना था जिसे सुनने के लिए बच्चे ही नहीं, बड़े भी खिंचे चले आते थे। उनकी सबसे प्रिय बात थी– 'मनुष्य की सबसे बड़ी दौलत उसका चरित्र है। '

उसी गाँव में रहता था आरव। किसान का बेटा। घर की आर्थिक स्थिति साधारण थी, लेकिन सपने आसमान जितने बड़े थे। आरव पढ़ाई में तेज था, पर उससे भी अधिक उसका मन लोगों की सहायता करने में लगता था। गाँव के बच्चे उसे अपना बड़ा भाई मानते थे।

एक दिन बाबा ने उसे बुलाकर कहा, 'बेटा, जीवन में दो रास्ते मिलेंगे–एक आसान और दूसरा सही। आसान रास्ता हमेशा भीड़ से भरा होगा, सही रास्ता अक्सर अकेला होगा। निर्णय तुम्हें करना होगा। ' आरव ने उस समय इस बात को सामान्य सलाह समझा, लेकिन उसे नहीं मालूम था कि यही वाक्य उसके जीवन की दिशा बदल देगा। समय बीतता गया। आरव शहर पढ़ने चला गया। पहली बार उसने ऊँची इमारतें देखीं, तेज़ रफ्तार जिंदगी देखी और देखा कि लोग समय से अधिक पैसे को महत्व देते हैं।

कॉलेज में उसकी मित्रता कई छात्रों से हुई। उनमें से एक था विक्रम–अत्यंत बुद्धिमान लेकिन सफलता के लिए किसी भी सीमा तक जाने को तैयार। परीक्षा में नकल, झूठे प्रमाणपत्र, दूसरों का श्रेय लेना–उसके लिए यह सब सामान्य था। एक दिन विक्रम ने आरव से कहा, 'ईमानदारी से केवल कहानियाँ लिखी जाती हैं, जिंदगी नहीं। ' आरव मुस्कुरा दिया। उसे बाबा का चेहरा याद आया। पढ़ाई पूरी होने के बाद दोनों को नौकरी मिली। कुछ वर्षों में विक्रम बड़ी गाड़ी, आलीशान घर और प्रभावशाली पहचान का मालिक बन गया। दूसरी ओर आरव ने एक छोटे विद्यालय में शिक्षक बनना स्वीकार किया। गाँव लौटने पर लोगों ने उसका मज़ाक उड़ाया।

'इतनी पढ़ाई करके मास्टर बन गया? '

'अगर थोड़ा समझदार होता तो शहर में लाखों कमाता। '

आरव केवल मुस्कुरा देता।

वह बच्चों को गणित पढ़ाने के साथ-साथ जीवन के समीकरण भी सिखाता। उसके विद्यालय में गरीब और अमीर का कोई भेद नहीं था। जिन बच्चों के पास किताबें नहीं होतीं, उनके लिए वह अपनी तनख्वाह से पुस्तकें खरीद देता।

वर्ष बीतते गए।

एक दिन भयंकर बाढ़ आई। गाँव की सड़कें टूट गईं। खेत डूब गए। कई परिवारों के घर बह गए।

सरकारी सहायता आने में समय था। ऐसे समय में सबसे पहले विद्यालय खुला। आरव ने उसे राहत शिविर बना दिया। बच्चे भोजन बाँटने लगे। महिलाएँ रसोई सँभालने लगीं। युवक नावों से लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाने लगे।

जब मीडिया पहुँची तो उसने पाया कि बिना किसी सरकारी आदेश के पूरा गाँव एक परिवार बन चुका है।

पत्रकार ने पूछा, 'इस सबका नेतृत्व किसने किया? '

गाँव वालों ने एक साथ कहा– 'हमारे मास्टरजी ने। ' माचार पूरे प्रदेश में फैल गया। कुछ महीनों बाद राज्य सरकार ने आरव को सम्मानित किया। मंच पर भाषण देते हुए उसने केवल इतना कहा– 'यदि शिक्षा केवल नौकरी दिलाए तो वह अधूरी है। शिक्षा तब पूरी होती है जब वह किसी का जीवन सँवार दे। ' सभागार देर तक तालियों से गूँजता रहा। उधर विक्रम की कहानी अलग दिशा में बढ़ रही थी। वर्षों की बेईमानी आखिर सामने आ गई। जाँच हुई। संपत्ति जब्त हुई। मित्र दूर हो गए। जिन लोगों ने कभी उसकी प्रशंसा की थी, वही लोग उसे पहचानने से भी बचने लगे। एक दिन वह टूटे मन से अपने पुराने गाँव पहुँचा। बरगद अब भी वहीं खड़ा था। नीचे आरव बैठा बच्चों को पढ़ा रहा था। विक्रम ने धीमे स्वर में कहा, 'मैं हार गया। '

आरव ने उसका हाथ पकड़ लिया और बोला, 'जो अपनी गलती स्वीकार कर लेता है, उसकी हार नहीं होती। '

दोनों देर तक बरगद के नीचे बैठे रहे। तभी हवा का एक झोंका आया। ऐसा लगा मानो रामस्वरूप बाबा की आवाज़ फिर गूँज रही हो– 'आसान रास्ता जल्दी मंज़िल दिखाता है, सही रास्ता जीवन बना देता है। ' कुछ ही दिनों बाद बाबा इस संसार से विदा हो गए। पूरे गाँव ने महसूस किया कि जैसे बरगद की एक शाखा टूट गई हो। उनके सम्मान में उसी बरगद के पास एक छोटी-सी पुस्तकालय बनाई गई– 'चरित्र भवन '। आरव ने अपने विद्यार्थियों से कहा, 'इस पुस्तकालय की सबसे बड़ी किताब कोई अलमारी में नहीं है। वह तुम्हारे आचरण में लिखी जाएगी। ' वर्षों बाद सूरजपुरा बदल चुका था। वहाँ से निकले अनेक बच्चे डॉक्टर बने, वैज्ञानिक बने, सैनिक बने, कलाकार बने। लेकिन जब भी उनसे सफलता का रहस्य पूछा जाता, वे कहते– 'हमें गणित, विज्ञान और भाषा से पहले इंसान बनना सिखाया गया था। ' बरगद अब बूढ़ा हो चला था। उसकी कुछ शाखाएँ सूख चुकी थीं, पर हर बसंत नई कोंपलें निकल आती थीं। एक शाम एक छोटा बालक अपनी माँ से पूछ बैठा–

'माँ, लोग इस पेड़ को इतना सम्मान क्यों देते हैं? ' माँ ने मुस्कुराकर कहा– 'क्योंकि यह केवल पेड़ नहीं है। यह हमें याद दिलाता है कि जड़ें जितनी गहरी होंगी, जीवन उतना ही ऊँचा होगा। ' सूरज धीरे-धीरे ढल रहा था। बरगद की लंबी छाया पूरे गाँव पर फैल गई थी। और उस छाया में केवल एक पेड़ नहीं, बल्कि सत्य, सेवा, शिक्षा और संस्कार की पूरी विरासत खड़ी थी–अडिग, शांत और सदैव जीवित।

मुकेश कुमार बिस्सा

कहानी

दीदी का चश्मा

शादी के घर में गहन शांति पसर गई थी। कोई कुछ नहीं बोल रहा था। बस सब एक-दूसरे का मुंह ताक रहे थे। दीदी इस कमरे से उस कमरे में राजधानी एक्सप्रेस की गति से चलायमान थी। दूल्हा बनने की प्रक्रिया में लगा छोटा भाई भी नहीं समझ पा रहा था कि दुल्हन से मिलने में विघ्न क्यों डाल रही है दीदी। छोटी बहन ने मम्मी को पहले ही कह दिया था कि दीदी चाहे जो कहे आप मुंह बना कर बैठ जाईए जैसे सारी दुनिया का बोझ आपके कंधों पर ही है, कुछ बोलिए ही नहीं। मासी की बड़ी बेटी ने तो हथियार डाल दिए कि अब क्या होगा? बारात जाएगी, अगवानी में बंदूक चलेगी पर हाथ-पाँव मारने को मिलेगा, वरमाला होगी, दुल्हन आएगी कि नहीं। ये सब सवाल गड्ड-मड्ड होकर पेट में नागिन डांस कर रहे थे। उधर बड़ी मामी ने अपने सफ़ेद ना हो रहे पर दशकों से सिल्की बालों के अनुभव के आधार पर घर की चुप्पी तोड़ते हुए कहा - देखो वहीं होगा। पर दीदी जिनको सुनने की नहीं बस सुनाने की आदत है, भड़क गई। चचेरे भाई की पत्नी, साली और साले जो दिल्ली से आए थे, सदमे में आ गए कि ये प्रोफेसर दीदी जो छः महीने पहले हमे थायलैंड की वेब सीरीज़ की हॉट ऐक्ट्रिस लग रही थी अब खूंखार बड़ी ननद क्यों लग रही है? पापा ने भी कह दिया - बारात बाद में जाएगी पहले ईरान-अमेरिका युद्ध से भी महत्वपूर्ण इस मुद्दे का समाधान ढूंढा जाएगा। पापा की इस लाइन से छोटा भाई जो दूल्हा बनने की प्रक्रिया में था, को गहरा आघात लगा। फूफा भी बुआ को कोने में ले जाकर पूछने लगे कि दूल्हे पर टिकुली कब फेरनी है? मालिन ने कह दिया - भईया हियाँ मामला गंभीर हो चला है, अब दूल्हा तैयार हो जाए, बारात चली जाए तो जानो। बजनिया वालों को भनक लगी तो वो भी बतियाने लगे कि बड़ी दीदी से मिलने वाला नेग तो गयो अब। कच्चा खाना बनाने वाले भी सिकुड़ गए कि शायद सब्जी-पूरी बनाकर कोई कांड कर दिया क्या पर मामला समझ कर चैन की सांस ली कि चलो आज हमारा नंबर नहीं है।

ख़बर दुल्हन के घर भी पहुंची। पापा ने फोन कर बताया कि बारात तो अभी नहीं आएगी और कब आएगी कुछ कहा नहीं जा सकता। दुल्हन की नानी ने कहा - अरे चली आइन्हे, का खाना भी ना दिखाई देई, हमरे लगे बैठि जाइन्हे, हम बताए रहब का होई रहा, हमरी अँखिन से देखि लेहए। दुल्हन की मम्मी के अपने दर्द। वो कहने लगी - अरे कित्ता नीक लरिका मिला है लेकिन बड़ी बहिन अडरपों बियाहे के दिन मचाए हैं, बताओ भला यही तिना करेक चही। दुल्हन की छोटी बहन सोची - अब पता लागि, जोड़ वाली ननद मिली है, हमका बचपन मा खूब कूटिन रहे। उधर पिता का बुरा हाल था कि शादी के ठीक छः घंटे पहले ये कौन सा सर्कस चल रहा है।

दीदी ने अल्टिमेटम दे दिया कि अब सब काम बंद कर बस उन पर ध्यान दे सभी। तय हुआ कि लावा लेने सभी जाएंगे तो घर खाली हो जाएगा तब मासी की मँझली बेटी रानू दीदी के साथ लगेगी। पाँव झन्नाते हुए सारी महिलायें चली गई भुजाईन के घर। सबकी बात का एक ही विषय रहा कि अब क्या होगा? बिना किसी गाने-बजाने के लोग ईंट वाले खरंजे से चले जा रहे थे। इधर घर में रानू और दीदी गंभीर चिंतन मुद्रा में चटाई पर आमने-सामने बैठे। रानू ने सवाल दागना शुरू किया - कपड़े बदलते समय आपने चश्मा उतारा था तो कहाँ रखा था? दीदी की कल्पना शक्ति थमने का नाम ही नहीं ले रही थी। उन्होंने बोलना शुरू किया - रिश्तेदारों में सब जलते हैं उनसे, किसी ने जान-बूझकर चश्मा छुपाया है उनका, वो चश्मा उतार कर हमेशा कवर में ही रखती हैं, कहीं और रखने का सवाल ही नहीं पैदा होता, पैदा होने से लेकर आज तक उन्होंने बहुत संघर्ष किया है, लोगों ने उन्हें बहुत परेशान किया है पर ईश्वर उनके साथ है। रानू ने समझने की कोशिश की आखिर दीदी का चश्मा खोने का संघर्ष से क्या सम्बन्ध है, दीदी तो टेप-रेकॉरडेर की तरह बजे ही जा रही हैं, पॉज ही नहीं हो रही। खैर बीस मिनट की संघर्ष-गाथा के बाद रानू ने कहा- आपने कपड़े उतार कर कहाँ रखे थे। दीदी ने बताया- ट्रॉली बैग में। ट्रॉली बैग खोला गया, साड़ी के नीचे चश्मा दबा हुआ था। रानू की हंसी और दीदी का धुआँ होता चेहरा दोनों एक साथ चमक रहे थे।

अपर्णा चौधरी रचना
सहायक प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

कहानी

परिवार उजाड़ दिया

उर्मि एक सरकारी महकमे में कार्यरत थी। नाम के अनुरूप सुन्दर, स्वभाव से शांत और सुशील भी। अपने सभी कार्यो को बड़े मनोयोग और दक्षता से करती थी इसलिए आफिस में भी सबकी चहेती थी। माता पिता ने अच्छा घर वर देख कर उसकी शादी कर दी। ससुराल में सास ससुर सहित भरापूरा परिवार था। वह भी सबमें घुलमिल ग ?ई ग ?ई थी। लेकिन प्रमोशन हो जाने के कारण उसका ट्रांसफर इन्दौर हो गया था और वह पति के साथ इन्दौर रहने आ ग ?ई थी। समय बीतता गया और वह दो प्यारे प्यारे बच्चों की माँ बन गई। एक लड़की प्रियंका और एक लड़का प्रीत। बच्चे बड़े हो गये और स्कूल जाने लगे। गृहस्थी की गाड़ी ठीक ठाक चल रही थी कि पति को शराब पीने की लत लग गयी। कहते है न कि नशा अनेक दुर्गुणों की खान है। नशे ने शंका, कलह, लडाई झगड़ा, मारपीट आदि अनेक बुराइयों को अपने में पनाह दे दी थी। शंका के कारण वह किसी से बात नहीं करने देता, मोबाइल चेक करता, बेवजह प्रश्न करता, ताने मारता ।मोबाइल छीन लेता ।आफिस संबंधित कामों का भी जवाब नहीं देने देता और दिन भर उस पर नजर रखता। इन सब कारणों ने उसका जीना हराम कर दिया था। अब तो वह मारपीट भी करने लगा था। बच्चे भी सहमे सहमे रहते। उर्मि बच्चों की खातिर इसी आशा में जी रही थी कि एक दिन सब ठीक हो जाएगा। लेकिन उसकी आशा दिन प्रति दिन निराशा में बदल जाती और अत्याचारों की रफ़्तार बढती जा रही थी ।अब बच्चे भी बड़े हो रहे थे सब समझने लगे थे। पिता का व्यवहार बेटी प्रियंका को बहुत पीड़ा देने वाला था। एक दिन पिता ने अति कर दी और मसाला पीसने वाला सिलबट्टा उठा कर माँ पर फेंका लेकिन निशाना चूक गया और माँ बच ग ?ई। उसके बाद वह बार बार माँ से कहती– माँ अपना तबादला कहीं बहुत दूर करवा लो वरना पापा आपको एक दिन मार डालेंगे। माता पिता को पता चला तो वो भी समझाते। हमारे पास विदिशा आ जाओ। यहाँ रहोगी? तो सुरक्षित रहोगी। ऐसे अत्याचारी दानव पति? को छोड़ दो। लेकिन उर्मि को लगता कि ये मेरा पीछा कहीं भी छोडने वाले नहीं है ।माता पिता और दुखी हो जाएगें यह सोच कर चुप हो जाती और सब सहन करती ।कभी उसे लगता , शायद बच्चों की खातिर ये सुधर जाएगें , लेकिन वह दिन कभी न आया। शंकालु स्वभाव और उस पर नशे ने 'करेला और नीम चढ़ा' वाली कहावत को साकार कर दिया। पत्नी की हत्या कर वह फरार तो हो गया लेकिन नशा उतरते ही इधर उधर भटकता रहा, छिपता रहा। अपने बचने का कोई रास्ता नजर नहीं आया तो उसने एक सुसाइड नोट लिखा। बच्चों को ,विशेष कर बेटी को बहुत याद किया और सारी सम्पत्ति बच्चों के नाम करके आत्महत्या कर ली। इस तरह नशे और शंका ने एक हंसता – खेलता शिक्षित परिवार उजाड़ दिया और दो होनहार बच्चों को अनाथ कर दिया।

कुसुम जैन शाजापुर
242 आलोक नगर इन्दौर।